Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 3, April-2021, ISSN 2230-7540

सामाजिक उन्नति हेतु महात्मा गाँधी के शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ का एक अध्ययन

Pushpendra[1]* Dr. Amita Kaushal[2]

[1] Research Scholar, Arunodaya University, ITA Nagar, Arunachal Pradesh

[2] Associate Professor, Department of Education, Arunodaya University, Itanagar, Arunachal Pradesh

सार – *गांधीजी की ने शिक्षा योजना का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु समाज की जरूरतों के लिए स्कूली शिक्षा से संबंधित जोर है। वह कमाई करते समय लर्निंग की प्रणाली के माध्यम से इस उद्देश्य को प्राप्त करना चाहता था। उन्होंने शिल्प के शिक्षण को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। वर्तमान के स्कूलों के पाठ्यक्रम से यह देखा जाएगा कि कार्य अनुभव और सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य एक महत्वपूर्ण स्थान पाते हैं। बचपन की शिक्षा के बारे में उनके विचार दिन के लिए काफी प्रासंगिक हैं। जीवन के शुरुआती चरणों के समुचित विकास के लिए अभिभावक शिक्षा पर जोर दिया जाता है। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा पर उनका जोर पूरे काल में स्वीकृत सिद्धांत है आज हम अपने बच्चों को एक और सहयोग के आदर्श की शिक्षा देते है,तो दूसरी ओर अपने बच्चों को प्रतिस्पर्द्धात्मक संसार के लिये भी तैयार करते हैं। इस प्रकार की द्वैत भावना के कारण हममित है, और आपस में बटे हुये हैं तथा संसार के संघर्ष में व्यष्टि को खो दिया है, क्योंकि कट्टर धार्मिक भावना एवं पारम्परिक दासता का बढ़ावा संसार में होता जा रहा है। इसी कारण महात्मा गांधी समाज की और शिक्षा की पुर्नरचना करना चाहते हैं। अतः शिक्षा शास्त्री के पुन रचना सम्बन्धी विचारों को अध्ययन करना भी हमारा और इस अध्ययन का लक्ष्य है।*

शब्दकुंजी – *महात्मा गांधी, शिक्षा, मातृभाषा, विचार*

----------X----------

प्रस्तावना

गाँधी जी ने शिक्षा का व्यापक एवं आधुनिक अर्थ लगाया है। वे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर जोर देते हैं। उनके अनुसार शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का वह साधन है जिससे बालक- बालिका में निहित सभी गुणों का सम्यक रूपेण विकास होता है। गाँधी के ही शब्दों में, शिशक्षा में मेरा तात्पर्य है कि बालक और मनुष्य में निहित शक्तियों का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास सर्वोत्तम रूपेण है। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न ही प्रारम्भ ही, यह तो पुरूष और स्त्री को शिक्षित करने का एक साधन मात्र है।[1] इस प्रकार गाँधी जी ने लिखने-पढ़ने के साधारण ज्ञान अर्थात् साक्षरता को शिक्षा न मानकर व्यक्ति की समग्र शक्तियों के विकास को ही शिक्षा की संज्ञा दी है। इस दृष्टि से वे फ्रो बिल औश्र वेस्तॉलाजी के निकटवर्ती लगते है। श्री महादेव दे साई के शब्दों में गाँधी जी चाहते थे कि, 'शिक्षा ऐसी हो जो बालक-बालिकाओं को सर्वांगीण मनुष्य बना सके। कोई भी शिक्षा गंभीर नहीं हो सकेगी जो बालक-बालिकाओं को पूर्ण मनुष्य एवं नागरिक न बना सकती हो गाँधी सच्ची शिक्षा को निरूपित करते हए अत्यन्त घोषणा करते है कि 'सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं शारीरिक संकायों को उनके अन्दर से बाहर की ओर प्रकट करती तथा उत्तेजित करती है। गाँधी सच्ची शिक्षा को निरूपित करते हुए अत्यन्त घोषणा करते है कि सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं शारीरिक संकायों को उनके अन्दर से बाहर की ओर प्रकट करती तथा उत्तेजित करती है।'

इस प्रकार गाँधी जी वास्तविक शिक्षा की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इनकी शिक्षा मानव के समग्र विकास पर बल देती है। ये अपनी बुनियादी शिक्षा को जीवन द्वारा जीवन की शिक्षा मानते है। सचमुच गाँधी जी की शिक्षा विचारधारा जीवन की ही शिक्षा है। ये शिक्षा द्वारा ऐसे वातावरण का सृजन करना चाहते है जिसमें सर्वाग विकास समान रूप से हो सके। इस प्रकार

गाँधी जी ने शिक्षा का आधुनिक, वैज्ञानिक, व्यापक एवं सच्चा अर्थ शिक्षा-जगत के समक्ष प्रस्तुत किया है।

गाँधी जी के शैक्षिक विचार:

गाँधी जी आधुनिक भारत के महान क्रान्तिकारी शिक्षा-विचारक थे। उनका शिक्षा-सिद्धान्त एवं प्रयोग के क्षेत्र में अमूल्य योगदान है। साधारणतः लोग उनके शिक्षा-दर्शन को वर्धा योजना तक ही सीमित करते है। निश्चित ही वर्धा योजना उनके शिक्षा-दर्शन का एक अभिन्न अंग है किन्तु यह उनके समग्र शिक्षा-दर्शन का पर्याय नहीं। वर्धा योजना मूलतः सात से चौदह वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा तक ही सीमित है। गाँधी जी ने केवल यही योजना नहीं प्रतिपादित की थी, उन्होंने अनेक शैक्षिक प्रयोग किये थे, जिनमें वर्धा योजना भी एक प्रयोग थी। अतः वर्धा योजना को उनके समग्र शिक्षा-दर्शन का पर्याय कहना उचित नहीं है। वस्तुतः वे महान क्रान्तिकारी, शैक्षिक विचारक थे। और अपने विचारों के द्वारा एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का सृजन करना चाहते थे।

गाँधी जी के शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, प्रकृतिवाद और यर्थाथवाद का सुन्दर समन्वय मिलता है। शिक्षा की अवधारणा एवं उद्देश्यों के क्षेत्र में वे आदर्शवादी सिद्ध होते है। बालक की सहज प्रवृत्तियों, क्रिया द्वारा शिक्षा एवं शिक्षा में स्वतंत्रता जैसे महत्वपूर्ण विचारों के कारण वे रूसों और पेस्तालॉजी के विचारों से प्रभावित प्रकृतिवादी चिन्तक प्रतीत होते है। शिक्षा में कौशल के कार्यो की योजना, सह-सम्बन्ध और बुनियादी शिक्षा के प्रसार हेतु योजना विधि का प्रयोग तथा वैज्ञानिक ज्ञान की कौशल के साथ दिये जाने की बात उन्हें एक सफल प्रयोगवादी चिन्तक होना प्रमाणित कराती है। उनकी आत्मकथा में भरे प्रयोग निश्चित ही उन्हें प्रयोगवादी शिक्षा विचारक सिद्ध करते है। 'गाँधी जी ने उत्पादक क्रिया को शिक्षा का माध्यम बनाने की संस्तुति की है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक बालक अपने बचपन से अपनी रोटी कमाने की आदत बनाये, तथा शिक्षा में श्रम एवं वैज्ञानिक ज्ञान को साथ जोड़ने की क्षमता हो।' आर्थिक समानता, प्रेम, अहिंसा, सत्याग्रह, स्त्री-पुरूष-समानता, विक्रेन्दीकरण, संतुलित- औद्योगीकरण, श्रम और पूँजी में वैवाहिक सम्बन्ध, समान शैक्षिक सुविधाओं की बात एवं धर्म निरपेक्षता जैसे विचार गाँधी जी को यथार्थवादी एवं सफल जनतांत्रिक प्रमाणित करते है। वे सचमुच एक प्रायोगिक शिक्षा दार्शनिक थे। उनकी शिक्षा योजना महान राजनीतिक दर्शन पर आधारित है जिसका ध्येय एक आदर्श समाज की उत्पत्ति एवं विकास है।

शिक्षा के विभिन्न स्वरूप

गाँधी जी ने शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर अपने सुन्दर एवं स्पष्ट विचार प्रस्तुत किया है जो निम्नलिखित है:

जनशिक्षा- जनशिक्षा का अर्थ समाज के जनसाधारण की शिक्षा से है। गाँधी जी ने जन शिक्षा की आवश्यकताओं का अनुभव करके समाज के सभी लोगों की शिक्षित करने का ध्येय से दो रूपों में शिक्षा की व्यवस्था की थी- प्रथम अपरिपक्व बालकों हेतु, द्वितीय प्रौढ़ो हेतु। अपरिपक्व बालकों के लिए उन्होंने बुनियादी शिक्षा का सूत्रपात किया और प्रौढ़ों के लिए प्रौढ़ शिक्षा का श्री गणेश किया। गाँधी जी ने गाँवों के अशिक्षित जनसंख्या के उत्थान हेतु ही यह व्यवस्था सोची थी।

गाँधीजी ने इस निमित्त विद्यार्थियों और समाजसेवकों को गाँवों में जाकर ग्रामीणों की क्षमताओं के अनुकूल शिक्षित करने, उन्हें चारित्रिक विकास एवं स्वस्थ आदतों के सीखने तथा विचारों के अभिव्यक्तीकरण की समुचित शिक्षा देने की सलाह दी थी। उनका विचार था ऐसी जन शिक्षा द्वारा ही भारत माता का कल्याण हो सकता है। गाँधी जी के ऐसे विशिष्ट के कारण ही एम0एस0 पटेल ने लिखा है कि, "मानव-जाति के दूत के रूप में सम्भवतः गाँधी जी सबसे बड़े सामाजिक शास्त्री थे, ऐसा सामाजिक शास्त्री आज तक विश्व ने नहीं देखा। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी, भारत और दक्षिणी अफ्रीका के आश्रमवासियों तथा भारत के बड़े जन समूहों को पढ़ाया था।"

प्रौढ़ शिक्षा- गाँधी जी प्रौढ़ शिक्षा उनकी जन शिक्षा का ही एक अंग है। उनका विचार था कि निरक्षरता हमारा सबसे बड़ा कलंक है जिसे शीघ्र ही दूर किया जाना परमआवश्यक है। वे प्रौढ़ो की निरक्षरता दूर करने पर जोर देते हैं। उनका कहना था कि श्मेरे विचार में दुखी होने और शर्म करने का जो कारण है, वह निरक्षरता उतना नहीं है जितना कि अज्ञानता। अतएव प्रौढ़-शिक्षा हेतु मुझे एक सावधानी से चुने गये पाठ्यक्रम द्वारा अज्ञानता दूर करने के निमित दूसरा कार्यक्रम रखना चाहिए।

जिससे ग्रामीण पौढों के मन को शिक्षित किया जाए। ग्रामीणों के मस्तिष्क के प्रशिक्षण हेतु उन्होने प्रौढ़ शिक्षा अपनाई जिसके द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एंव सांस्कृतिक जीवन की शिक्षा का विधान था तथा जो बाल-विवाह, अन्ध-विश्वासों, छुआछूत और मधपान जैसे दुर्गुणों से बचाने की कवच का काम करने वाली थी। प्रौढ़ शिक्षा के सन्दर्भ में उन्होंने स्पष्ट कहा था कि, ष्मैं प्रौढ़-शिक्षा को उस साधारण अर्थ में जैसे हम लोग समझते है नहीं लूँगा, बल्कि वह तो अभिभावकों की शिक्षा होगी जिससे वे अभिभावक अपने बच्चों के निर्माण में पर्याप्त उत्तरदायित्व निभा सके।" इस प्रकार गाँधी जी ने

एक विशिष्ट प्रकार की प्रौढ़-शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा प्रस्तुत किया।

गाँधी जी की जागरूक प्रेरणा के फलस्वरूप ही आज प्रौढ़-शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम द्रुत गति से बढ़ रहा है और इस दिशा में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। इसका पाठ्यक्रम आज इतना सबल एवं विकसित बन रहा है कि भविष्य में इससे नागरिकों के सर्वांग विकास की पूरी-पूरी आशा है।

सह-शिक्षा- गाँधी जी ने सह-शिक्षा के सम्बन्ध में कोई दृढ मत व्यक्त न करके कहा था कि सह शिक्षा का भार समाज पर छोड़ दिया जाए, किन्तु वह सह शिक्षा देने के प्रश्न पर उदार दृष्टिकोण रखते थे। उनका विचार था कि सह शिक्षा भारत जैसे रूढ़िवादी देश में भी सम्भव है परन्तु उसके लिए उपयुक्त निगरानी की आवश्यकता पड़ेगी। सह शिक्षा का प्रारम्भ वे परिवार से कराना चाहते थे। उनका विचार था कि परिवार में बालक-बालिकाओं को स्वतंत्रतापूर्वक विकसित करने का अवसर मिलना चाहिए। आठ वर्ष की आयु तक भी उन्हें एक साथ पढ़ाया जा सकता है। प्राथमिक और उच्च शिक्षा में वे सह-शिक्षा उपयुक्त मानते थे। सेक्स-शिक्षा- सेक्स-शिक्षा पर गाँधी जी के आधुनिक विचार थे। वे किशोरों को सेक्स-शिक्षा द्वारा सेक्स भावना का शोधन तथा उस पर पूर्ण नियंत्रण की शिक्षा देना चाहते थे। सेक्स के लिए गाँधी ने ऐसे अध्यापकों को उपयुक्त बताया है। जिन्होंने अपने मनोवेगों पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त कर लिया है।

शारीरिक शिक्षा- गाँधी जी शरीर को स्वस्थ रखना परम आवश्यक समझते थे। उनका विश्वास था कि उद्योग से बालकों को पर्याप्त शारीरिक श्रम का अवसर सुलभ होगा। वे सस्ते भारतीय खेलों को पसंद करते थे। सरलता और आत्म निर्भरता तथा स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से पैदल चलना एवं टहलना वे नर-नारी हेतु सर्वोत्तम साधन मानते थे। इस प्रकार उन्होंने शारीरिक शिक्षा को परमावश्यक बताया है।

भाषा शिक्षा- गाँधी जी भाषा-विवाद को समाप्त करके मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा में शिक्षा के हिमायती थे। उनका कहना था कि श्भारत को अपनी जलवायु, अपने ही प्राकृतिक सौन्दर्य और अपने ही साहित्य में फलना-फूलना होगा फिर चाहे कितना ही घटिया वह इंग्लैण्ड के मुकाबले में क्यों न हो।

गाँधी जी ने अंग्रेजी में शिक्षा देने का समर्थन किया है परन्तु बड़े ही स्पष्ट शब्दों में उनकी घोषणा की थी कि, "अंग्रेजी भाषा को उसके स्थान पर रखना मुझे प्रिय है, किन्तु यदि वह ऐसा स्थान हड़प लेती है जो उसका नहीं है तो मैं उसका कट्टर विरोधी हूँ। मैं उसे दूसरी वैकल्पिक भाषा का स्थान दे सकता हूँ, वह भी स्कूल की पढ़ाई में नहीं, विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम में। यही हमारी मानसिक दासता है हम समझते है कि अंग्रेजी बिना हमारा काम नहीं चल सकता।" रूस ने बिना अंग्रेजी के ही वैज्ञानिक प्रगति में ख्याति प्राप्त की है। अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की भाषा है। उसमें अनेक सुन्दर रत्न भरे है और उनके हमें पाश्चात्य विचार एवं संस्कृति का परिचय मिलता है। इसलिए हममें से कुछ लोगों को अंग्रेजी जानना अत्यावश्यक है। वे राष्ट्रीय व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति के विभाग चला सकते है और राष्ट्र को पश्चिम का उत्तम साहित्य, विचार और विज्ञान दे सकते है।

गाँधी ने राष्ट्रभाषा द्वारा शिक्षा देने पर विशेष बल दिया था। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि "अंग्रेजी राष्ट्र भाषा का पद नहीं ले सकती क्योंकि उसमें निम्नलिखित गुणों की कमी है जो हिन्दी भाषा में मिलते है। ये गुण है:

1. अंग्रेजी आफिसियल क्लास के लोगों के लिए सीखनी कठिन है,
2. जबकि हिन्दी सीखना सरल है। हिन्दी के माध्यम से धार्मिक, राजनीतिक, व्यावसायिक क्रियाएं सारे भारत में सम्भव है।
3. सारे देश के लिए हिन्दी सीखना आसान है।
4. हिन्दी ही अधिकांशतः भारतीयों को नित्य प्रयोग की भाषा है।
5. सार्वभौमिक दशाओं में यही उपयुक्त भाषा है। अतः हिन्दी ही राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित हो सकती है।"

गाँधी जी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का आधार प्रान्तीय भाषाएं माना है। उनका विचार था कि सभी भारतीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में ही पढ़ाना श्रेयस्कर है।

गाँधी का विचार था कि प्रत्येक सभ्य भारतीय को अपनी प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाएं भी जाननी चाहिए। उनका मत था कि एक भाषा का समयक ज्ञान हो जाने पर अन्य भाषाएं सीखना, सरल होता है। अंग्रेजी का बोझ हट जाने पर कई भाषाएँ सरलता से सीखी जा सकती है। इसी कारण 'गाँधी ने उच्च शिक्षा में प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी के अध्ययन का विचार प्रकट किया था।'

शिक्षा के उद्देश्य

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य गाँधी जी शिक्षा द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। सर्वांगीण विकास हेतु वे हृदय, हाथ और मस्तिष्क (Heart, Hand and Head) का विकास आवश्यक मानते थे। उनकी शिक्षा का आधार भारतीय संस्कृति, दर्शन और जीवन था। इसी परिपेक्ष्य में उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों की व्यवस्था की थी। उनकी शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है।

क. शिक्षा के तात्कालिक उद्देश्य

इसके अन्तर्गत वे सभी उद्देश्य समाहित है जिनकी प्राप्ति किसी काल में किसी भी समय आवश्यक होती है। गाँधी जी ने तात्कालिक उद्देश्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को सम्मिलित किया है

1. **चरित्र निर्माण का उद्देश्य-** गाँधी जी के अनुसार सम्पूर्ण ज्ञान का उद्देश्य चरित्र-निर्माण होना चाहिए। आत्म संस्कार हेतु उन्होंने इस उद्देश्य पर काफी बल दिया था। उनका कथन है कि- "मैं ने हृदय की संस्कृति या चरित्र-निर्माण को सदैव प्रथम स्थान दिया है। मेरी समझ में चरित्र-निर्माण उपयुक्त आधारशिला है।" गाँधी जी कहते है कि मैं अनुभव करता हूँ कि यदि हम व्यक्ति का चरित्र-निर्माण करने में सफल हो जाते है तो समाज स्वयं सुधर जायेगा। मैं ऐसे विकसित व्यक्तियों द्वारा सुगठित समाज में विश्वास रखने की सदिच्छा रस गा।१श् उन्होंने समग्र ज्ञान का लक्ष्य चरित्र-निर्माण मानते हुए घोषणा की थी कि, "The end of all knowledge must be building up of character" उन्होंने कहा है कि चरित्र के बिना शिक्षा व्यर्थ है। इसी सम्बन्ध में उनकी स्पष्ट घोषणा है कि विद्यार्थियों को स्वयं अपना चारित्रिक विकास करना चाहिए। उन्हीं के शब्दों में, "Character cannot be built with mortar and stone- It cannot be built by hands other than your own- The principal and the professor cannot give you character from the rayes of books] character building comes from their very lives and really speaking] it must come from within yourselves" गाँधी जी इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विद्यालय को चरित्र निर्माण की उद्योगशाला मानते थे तथा साहस, बल, पवित्रता, सद् गुण, प्रेम आदि के विकास पर जोर देते थे।

2. **स्वतंत्र विकास का उद्देश्य-** गाँधी जी ने शिक्षा का द्वितीय उद्देश्य स्वतंत्र विकास माना था। स्वतंत्रता के दो अर्थ हैं, प्रथम- समस्त प्रकार की भौतिक परतन्त्रता से छुटकारा, द्वितीय - आध्यात्मिक स्वतंत्रता अर्थात् शारीरिक बन्धनों से छुटकारा। उन्होंने "सा विद्या या विमुक्तये" को स्वीकार किया था और शिक्षा द्वारा दोनों प्रकार के स्वतंत्र विकास पर आजीवन जोर देते रहे।

3. **सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य-** गाँधी जी ने शिक्षा का तृतीय उद्देश्य सांस्कृतिक विकास माना था। उन्होंने माना है कि संस्कृति नींव है, प्रारम्भिक वस्तु है। तुम्हारे सूक्ष्म व्यवहार में इसको प्रकट होना चाहिए। गाँधी जी कहते है कि, मैं शिक्षा में साहित्यिक पक्ष के बजाय सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व प्रदान करता हूँ। गाँधी जी संस्कृति के दो रूप मानते थे- प्रथम बाह्य संस्कृति, जिसका सम्बन्ध वातावरण से है, द्वितीय आन्तरिक संस्कृति जिसका सम्बन्ध आत्मा से है जो व्यक्ति के व्यवहारों से प्रकट होती है। शिक्षा द्वारा वे दोनों को विकसित करना चाहते थे। पक्षपात एवं अहंकार के कारण व्यक्ति उचित व्यवहार नहीं कर पाता है। शिक्षा द्वारा उसे इस योग्य बनाना है कि वह व्यक्ति की आत्मा के ऊपर का ऐसा गलत आवरण हट जाय जिससे आत्मा स्वतः ऊपर उठती जाय। गाँधी जी कहते है कि, "आप बालकों को किसी एक या दूसरे व्यवसाय में प्रशिक्षित करें। उसके विशिष्ट प्रशिक्षण के रूप में आप उनके मन को, उसके हस्तलेख को, उसके सौन्दर्य-ज्ञान को तथा अन्य बातों को ही विकसित करेगें। उनका विचार था कि हस्तकला द्वारा सहयोग, चित्र कला द्वारा सौन्दर्य बोध एवं संगीत द्वारा सहानुभूति और प्रेम उत्पन्न किया जाय।"

4. **स्वभाव की पूर्णता का उद्देश्य-** गाँधी जी बालक के स्वभाव को पूर्ण बनाना चाहते थे। वे हृदय, मस्तिष्क और हाथ तीनों को शिल्प द्वारा पूर्ण विकास करने पर जोर देते है। गाँधी जी का विश्वास है कि, जब तक मस्तिष्क और शरीर का विकास आत्मा की जागृति के साथ-साथ नहीं होगा तब तक पहले प्रकार का विकास एकांगी सिद्ध होगा। पूर्ण मानव के निर्माण हेतु तीनों का उचित एवं समन्वित ज्ञान आवश्यक है।

5. **नागरिकता के विकास का उद्देश्य-** गाँधी जी जनतांत्रिक चिन्तक थे। वे शिक्षा द्वारा स्वस्थ नागरिकों का सृजन करना चाहते थे, जिससे व्यक्ति, अपने अधिकारों और कर्तव्यों का सम्यक् ढंग से पालन कर सके। "एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को एक

www.ignited.in

नयी पीढ़ी को जन्म देना चाहिए जिससे अपनी समस्याओं, अधिकारों और कर्तव्यों को समझने का अवसर मिलें। इस प्रयोजन की दृष्टि से हमें एक नई शिक्षा-प्रणाली की आवश्यकता है जो कम से कम इतनी न्यून शिक्षा तो दे सके जिससे नागरिकता के अधिकारों और कर्तव्यों का बौद्धिक द्द अभ्यास हो सके। वार्के के अनुसार।

6. **जीविकोपार्जन का उद्देश्य-** गाँधी जी जीविकोपार्जन को भी शिक्षा का उद्देश्य मानते हुए कहते है कि, जब बालक 14 वर्ष का हो जाय और सात वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा कर ले तो उसे अर्थो पार्जन करने वाला एक सदस्य बनाकर विद्यालय से बाहर भेजा जाना चाहिए। अब भी निर्धन लोगों के बच्चे स्वतः ही अपने माँ-बाप के जीविकोपार्जन के कार्यो में हाथ बटाया करते हैं। उनके मन में यह भावना कार्य करती रहती है कि यदि वे कार्य करने में साथ नहीं देगें, परिवार का लालन-पालन करना मुश्किल हो जायेगा। यह सोचना स्वयमेव ही एक शिक्षा है।

7. **शारीरिक विकास का उद्देश्य-** मनुष्य जीवन का कोई भी उद्देश्य क्यों न हो? उसकी प्राप्ति इस शरीर द्वारा ही होती है। अतः उसका विकास अवश्य होना चाहिए। अपने विद्यालयी जीवन में ही गाँधी जी ने शिक्षा के इस उद्देश्य की आवश्यकता अनुभव कर ली थी। आगे चलकर उन्होंने इसे आत्मिक विकास के लिए भी आवश्यक समझा। गाँधी जी स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास मानकर शारीरिक विकास पर बल देते थे।

8. **वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास का उद्देश्य-** गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति की वैयक्तिकता ही सम्पूर्ण उन्नति का आधार है। प्रत्येक मनुष्य में कुछ व्यक्तिगत गुण होते है। उन्हीं गुणों को व्यक्ति की वैयक्तिकता की संज्ञा दी जाती है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की इसी वैयक्तिकता को सुरक्षित रखना है। गाँधी जी के शब्दों में, व्यक्ति ही सर्वोपरि विचार होता है। गाँधी जी के विचार में, शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छे व्यक्ति ही नहीं तैयार करना होता है, अपितु सामाजिक तौर पर ऐसे नर-नारियों का निर्माण होता है जो समाज, जिसमें वे रहते है, में अपना उचित स्थान रखें और समाज के प्रति अपना कर्तव्य समझें। वैयक्तिकता का सम्यक विकास समाज में ही सम्भव है। उन्हीं के शब्दों में, मैं वैयक्तिक स्वातन्त्रय को महत्व देता हूँ, किन्तु याद रखना होगा कि व्यक्ति अनिवार्य रूपेण एक सामाजिक प्राणी है उसने अपनी वर्तमान स्थिति को सामाजिक प्रगति की आवश्यकताओं के साथ वैयक्तिकता को व्यवस्थित करना सीख कर प्राप्त किया है। अनियन्त्रित वैयक्तिकता तो जंगल के पशुओं का नियम है, जहाँ शक्ति ही सब कुछ है। हमने वैयक्तिक स्वतंत्रता और सामाजिक नियन्त्रण के बीच का मार्ग अपनाने का प्रयत्न किया है। समूचे समाज की भलाई हेतु स्वेच्छा से सामाजिक नियन्त्रण को स्वीकार करने से व्यक्ति और समाज दोनों का विकास होता है। मैं भारत का विनम्र सेवक हूँ और भारत की सेवा करने में मानवता की सेवा ही करता हूँ। इस प्रकार गाँधी जी मानते है कि यदि समाज द्वारा व्यक्ति को समुचित शिक्षा नहीं दी गयी तो उसकी वैयक्तिकता का विकास असम्भव होगा। जहाँ शिक्षा व्यक्ति के वैयक्तिक विकास का प्रबल साधन है, वही उसे समाजोपयोगी बनाने में अमोध यन्त्र भी।

ख. शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य

गाँधी जी शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य-आत्मानुभूति वा ईश्वर का ज्ञान वा अन्तिम वास्तविकता का अनुभव मानते है। गाँधी जी के ही शब्दों में, मनुष्य का चरम लक्ष्य ईश्वर की अनुभूति पा लेना है और मनुष्य की सभी क्रियाएं वे चाहे सामाजिक हो, राजनीतिक हों या धार्मिक, सबको ईश्वर 1- (टी.एस. अविनाश लिंगम, 'गाँधी जी एक्सपेरीमेंट्स इन एजुकेशन दर्शन के चरम उद्देश्य द्वारा मार्ग दर्शन मिलना चाहिए। ईश्वर को पाने का अर्थ है ईश्वर की सृष्टि में उसकी अनुभूति करना और उसके साथ एकाकार हो जाना। यह काम सबकी सेवा करने से ही हो सकता है। मैं उसकी पूर्णात्मा का अंश हूँ और मैं उस ईश्वर को शेष मानवता के बाहर नहीं पा सकता।'

गाँधी जी ने लिखा है कि, एक विद्यार्थी ब्रह्मचारी होता है क्यों कि उसका सभी अध्ययन और सभी क्रियाओं का लक्ष्य ब्रह्म की खोज है। ब्रह्म ही आत्मा है, अतएव आत्मबोध या ब्रह्मबोध शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इस उद्देश्य के सम्बन्ध में गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा' में लिखा है कि टॉलस्टॉप फार्म पर बालकों को शिक्षा देने का कार्य करने से बहुत पहले मुझे इस बात का ज्ञान हो गया था कि आत्मा का प्रशिक्षण स्वयं एक महान कार्य है। आत्मा का विकास करना, चरित्र का निर्माण करना है एवं एक व्यक्ति को ईश्वर तथा आत्मानुभूति के लिए कार्य करने के योग्य बनाना है। इस सम्बन्ध में गाँधीजी गीता से प्रभावित है। वे ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग, इन सब पर

समान बल देते थे। अहिंसा और सत्याग्रह को वे इनका मूर्त रूप मानते थे।

महात्मा गाँधी जी के अनुसार शिक्षण विधियाँ

गाँधी जी धार्मिक होने के साथ-साथ बड़े व्यावहारिक भी थे। उन्होंने मनोविज्ञान का अध्ययन तो नहीं किया था, पर ऐसा लगता है कि वे व्यावहारिक मनोविज्ञान के पंडित थे। शिक्षण के क्षेत्र में वे सबसे अधिक बल क्रिया पर देते थे। उनके अनुसार करके सीखना (Learning by doing) और स्वयं के अनुभव से सीखना ही उत्तम सीखना है। इस प्रकार से गाँधी जी ने निम्नलिखित शिक्षण विधियों का समर्थन किया है

1. क्रियाविधि

इस विधि के माध्यम से उन्होंने शिल्प की शिक्षा पर विशेष बल दिया है। वे पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करने के स्थान पर हाथ और मस्तिष्क दोनों को सक्रिय चाहते थे। इसीलिए क्रिया-विधि का उन्होंने सूत्रपात किया था। उनका विचार था कि मस्तिष्क की सच्ची शिक्षा शारीरिक अंगों- हाथ, आँख, नाक, कान आदि के उचित अभ्यास और प्रशिक्षण से प्राप्त की जा सकती है। इस क्रियात्मक पद्धति के अन्तर्गत वे व्यावहारिक ज्ञान निम्न सहयोगी, पद्धतियों द्वारा प्राप्त कराना चाहते थे- खेल, प्रयोग, प्रदर्शन एवं सुलेख तथा निरीक्षण पद्धतियाँ।

2. अनुकरणविधि

महात्मा गाँधी जी के अनुसार बच्चे अनुकरण से जल्दी सीखते हैं। इसीलिए वे माता-पिता, अभिभावक तथा अध्यापकों को उच्च आदर्शों द्वारा नित्य शिक्षित करने की सलाह देते है।

3. मौखिक विधि

भाषा, भूगोल, इतिहास और समाजशास्त्र तथा गणित जैसे विषयों को पढ़ाने के लिए गाँधीजी मौखिक विधि की संस्तुति करते है। विभिन्न कक्षाओं की आवश्यकता के अनुसार इस विधि के अन्तर्गत प्रश्नोत्तर, तर्क, व्याख्यान, कथा, कहानी, वाद-विवाद, उपदेश और निर्देश जैसी पद्धतियाँ प्रयुक्त की जाती हैं।

4. श्रवण-मनन-निदिध्यासन विधि

महात्मा गाँधी जी सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के लिए इन तीनों प्राचीन क्रियाओं द्वारा शिक्षा देने पर बल देते है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि, 'मेरी दृष्टि में विचार करने की कला सच्ची शिक्षा है।' इसके लिए श्रवण-मनन और निदिध्यासन परमावश्यक है, क्योंकि इन्हीं क्रियाओं के द्वारा आत्मानुभूति सम्भव है।

5. सहयोग विधि

महात्मा गाँधी जी ने क्राफ्ट की शिक्षा के लिए शिक्षक- शिक्षार्थी तथा शिक्षार्थी- शिक्षार्थी के बीच सहयोग को आवश्यक मानकर सहयोग विधि अपनाने पर विशेष ध्यान दिया है। सहयोग तथा सहानुभूति के अभाव में सचमुच कोई क्रिया सफल नहीं होती है। अन्यथा शिक्षा का कार्य अधूरा होता है। इसके लिए यह आवश्यक है किपरस्पर अधिक से अधिक सहयोग दिया जाय।

6. सह-सम्बन्ध विधि

महात्मा गाँधी जी पाठ्यक्रम में हस्त-कौशल को केन्द्र मानकर सभी विषयों को उसी के माध्यम से पढ़ाने पर जोर दिया है। इस प्रकार सभी विषयों में परस्पर सह-सम्बन्ध स्थापित करने के कारण ही यह विधि सह-सम्बन्ध विधि कहलाती है। इसे समन्वय विधि भी कहते है क्यों कि सभी विषयों में समन्वय स्थापित करके ही पढ़ाये जाते है।

7. संगीत विधि

शारीरिक-शिक्षा, हस्तकौशल, नैतिक और धार्मिक-शिक्षा में गाँधी जी संगीत विधि पर जोर देते है। उनका विश्वास था कि संगीत द्वारा रूचि उत्पन्न करके उक्त क्रियाओं की ओर बालकों का ध्यान आकर्षित किया जाता है साथ ही वे अनुशासित भी रहते हैं। व्यायाम तथा शिल्प की शिक्षा में संगीत का प्रयोग करने का गाँधी जी समर्थन करते है। उनके परामर्शानुसार ड्रिल करते समय तथा तकली आदि से सूत कातते समय गानों का उच्चारण करने का अभ्यास भी किया गया। बेसिक शिक्षा में इस विधि को अपनाया गया।

उपसंहार

शिक्षा जगत में गाँधी जी एक शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रतिष्ठित है। गाँधी जी किसी नये दर्शन के प्रतिपादक नहीं है। उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन को व्यावहारिक रूप में दिया है। परन्तु इसे व्यावहारिक रूप देने में उनकी अपनी मौलिकता है इसलिए आज उसे एक अलग दर्शन गाँधीवाद के नाम से जाना जाता है। हमें गाँधी जी के सर्वोदय दर्शन का भी अनुसरण करना चाहिए। गाँधी जी के बेसिक विद्यालयों में विषयों की पढ़ाई उनकी समय-सारणी आदि की सम्यक व्यवस्था है। आज यदि उसे तथा उस पर आधारित बेसिक शिक्षा योजना को पूर्ण रूपेण समझकर भारतीय शिक्षा में समाहित किया जाय तो वर्तमान शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं चरित्रगत दोषों से निश्चय ही मुक्ति पाकर राम-राज्य की कल्पना को साकार किया जा सकता है। स्वामी जी के गुरू-गृहवासों में गाँधी जी की तरह पढ़ाई-लिखाई

www.ignited.in

सम्बन्धी कोई औपचारिकताएं नहीं है। फिर भी वे गुरू-गृह-वास बहुमुखी प्रतिभा के केन्द्र है। जहाँ सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, चारित्रिक, मानसिक, सांस्कृतिक एवं उत्थान सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रभावी विधियों एवं तकनीकों के द्वारा दिये जाते है और वेदान्त का प्रचार-प्रसार सामूहिक रूप से किया जाता है। आज देश में सार्वजनिक शिक्षा प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। फिर भी सम्पूर्ण साक्षरता नहीं आ पा रही है। स्वामी जी एवं महात्मा गाँधी दोनों ही जन साक्षरता के प्रबल समर्थक थे और प्रत्येक व्यक्ति को साक्षर देखाना चाहते थे। वे अपने-अपने प्रयासों में काफी हद् तक सफल भी रहे है। आज जन साक्षरता कार्यक्रमों को संचालित करने में हमें महात्मा गाँधी एवं स्वामी जी के प्रयासों से कुछ सबक लेने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ-ग्रंथ सूची

1. धर्माधिकारी दादा - गाँधी की दृष्टि, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-1998।
2. पैथियाथ, जे.डी.- स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद 19781।
3. पटेल, एम०एस०-- एजुकेशनल फिलासफी ऑफ महात्मा गाँधी नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद 1956।
4. पाण्डेय, शिवमोहन एवं आशुतोष- राष्ट्रीय शिक्षा धारा के प्रवर्तक प्रकाशक, अग्रवाल प्रेस, इलाहाबाद 1979-80।
5. पाण्डे य, आर.एस.- शिक्षा के मूल सिद्धान्त विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1999।
6. पाण्डे य रामशकल - शिक्षा दर्शन विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1983।
7. पाण्डेय, बी0बी0- शिक्षा में नवाचार तथा आधुनिक प्रवृत्तियाँ, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1997।
8. पाण्डे य, वी0वी0- भारतीय शिक्षा का इतिहास और सामयिक समस्याएँ वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 2000।
9. बुच, एम.बी. (स) ए. सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (फस्ट सर्वे) सी.ए.एस.ई.एम.एस.यू. बड़ौदा 1974।
10. बुच, एम.बी. (स) - 'सेकेण्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन सोसायटी फार एजूकेशनल रिसर्च, बड़ौदा 1980।
11. ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन बुच, एम.वी. (सं.)- 'थर्ड सर्वे एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली, 1987।
12. विष्णु प्रभाकर- गाँधी जी के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग, सस्ता साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली, 1999।
13. गाँधी जी का जीवन दर्शन: काका साहब, कालेलकर नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, 14
14. हिन्दू मुस्लिम एकता और गाँधी एक अध्ययन: मनोज कुमार झा, सन्मार्ग प्रकाशन नई नई दिल्ली-110007
15. जीवन प्रभात प्रभुदास गाँधी एवं काका कालेलकर सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1967

Corresponding Author

Pushpendra*

Research Scholar, Arunodaya University, ITA Nagar, Arunachal Pradesh